विघ्नों को समाप्त कर सुख स्वरूप बनो, न दुःख दो, न दुःख लो

दादी जानकी

विश्व सेवा अर्थ हम सबको संगठित रूप में एक घण्टा वर्ल्ड मेडीटेशन करने का चांस मिलता है। हम सिर्फ विश्व सेवा अर्थ मेडीटेशन नहीं करते परन्तु इसमें स्वयं की कमाई होती है। ये नियम बनाया है। यह पर्सनल स्वयं की और सेवा की उन्नति का साधन बन गया है। अगर एक घण्टा भी बुद्धि एकाग्रचित्त, शान्तचित्त, उदारचित्त हो, उपराम वृत्ति से बाबा के साथ बैठे तो बहुत कमाई है। बाबा कहते हैं बच्चे ग्लोब के ऊपर बैठ जाओ। ऊपर कब बैठेंगे? जब बाबा के साथ बैठेंगे। जैसे सूर्य और चन्द्रमा के समान। सूर्य अपना काम करता है, चन्द्रमा अपना काम करता है। सूर्य किरणें फैलाता है, पूर्णमासी का फुल चन्द्रमा कितनी शीतलता देता है। तो ऐसे ज्ञानसूर्य बाबा की किरणें मिलती रहें और विश्व में फैलती रहीं। अभी जरूरत है किचडे को भस्म करने की, अनेक आत्माओं के अंधकार को मिटाने की। साथ-साथ हमारी सम्पूर्णता, एंजलिक स्टेज अनेक आत्माओं को शीतलता, शान्ति और प्रेम का अनुभव करा देती है। बाप ने इतनी योग्यतायें हम आत्माओं में भरी हैं, पालना भी दी हैं, पढाई भी दी हैं, शिक्षायें भी दी हैं। समान बनने की उम्मींद रखकर हिम्मत भी दी है, स्नेह से दुआयें भी दी हैं। हरेक जानता है बाबा ने कितना दिया है, वो इमर्ज करते हैं। तो भाग्य विधाता, हमको समान बनाने के लिए ही बार-बार सामने आता है। तो हरेक देखे कि कितना बार समान बनाने के लिए बाबा सामने आता है। बाबा सामने बैठा हुआ कहता है, ऐसे तपस्या में बैठो, अडोल स्थिति के आसन पर बैठ जाओ। विष्णु के लिए कहेंगे कि विकारों की शेष शैया पर लेटा हुआ है। विष्णु के समान लेटे हुए हैं, लक्ष्मी पकृति दासी पांव दबा रही है। दासी बन रही है। तपस्वीमूर्त को कोई भी विकारों का डर नहीं है। जैसे सर्प को मुरली बजा कर टोकरी में डाल देते हैं, यह भी अशरीरी पन का अनुभव है।

सारे दिन में कार्य व्यवहार तो चलता ही रहता है। तो जो विघ्न आते हैं वो भी समाप्त हो जाते हैं, परन्तु विघ्नों को समाप्त करने के लिए अचल-अडोल स्थिति बनाने के लिए, सेकण्ड में हर बात पास हो जाये, घण्टे वा दिन न लगें, महीने न लगें क्योंकि समय बहुत थोडा है और समय बहुत कीमती है। समय ही हमारी वैल्यू को बताता है कि तुम्हारी वैल्यू कितनी है। समय ही दिखाता है कि तुम बाबा से खजाना लेकर कितनी मालामाल हो सकती हो। सेवा चौथा नम्बर है, पहले स्वयं की स्थिति अचल-अडोल रहे, जिनके साथ भी सम्बन्ध है उनके साथ कर्मों का हिसाब-किताब न हो। स्नेह से सहयोगी होकर रहना फिर सहजयोगी होकर सदा सुखमय स्थिति में रहना। दुःख का नामनिशान हमारे पास न हो। देने वाले टेस्ट लेते हैं, लेने वाला नहीं लेता है तो बाबा बचा लेता है। हम लेते हैं तो बाबा बचाए कैसे। हम नहीं लेते हैं तो बाबा कहता है सयानी सच्ची बच्ची है ना, मैं ठीक कर दूँगा। सच्चे सयाने बच्चे बहुत खबरदार रहते हैं, उनसे कोई दुःख ले भी ले लेता है तो उससे वापस ले लेते हैं। परन्तु कोई दुःख देता है तो लो नहीं।

बाबा ने कहा अपने दिल में सच्चाई, स्नेह और क्षमा भावना रखो। क्यों में दुःख होता है। सच्चाई और स्नेह में होता ही नहीं है। हम सच्चे हैं, स्नेही हैं, क्षमा करना माना भूल जाना। एक मिनट के बाद भी याद न आये। बार-बार याद आती है तो दुःख बढ़ता जाता है। दुःख बढ़ता है तो दुःखहर्ता बाबा भूल जाता है। हम मास्टर दुःख हर्ता हैं, शान्ति दाता बनने का मेरा रोल है, वो भूल जाता है। रोल कान्सेस नही बनना है, ये भगवान ने हमको गिफ्ट दी है। आगे इतना दुःख नहीं महसूस होता था। भले सुख अल्पकाल का था परन्तु दुःख महसूस नहीं होता था। जब ईश्वरीय सुख मिला है तो उसको छोड़ कर दुःख ले लेते हैं तो इतना महसूस होता है, बात मत पूछो। अभी सदाकाल का सुख छोड़ दुःख लिया तो जैसे आपदा महसूस होती है। आपदा भी आये तो जो सुख मिला हुआ है उससे पार कर लेवें। सुख से शक्ति जमा है, ऐसे नहीं अल्पकाल का सुख है। ज्ञान की शक्ति जमा है, बाप के सम्बन्ध से, शक्ति से सुख है। सबके साथ सेवा में सम्बन्ध में आते न्यारे रहते तो सुख है। लटके अटके नहीं हैं तो सुख है। कोई बात पास्ट हो गई तो उसको भूलने से सुख है। किसी को भुला देने से भी सुख है। अपने से कोई भूल हो गई तो माफ कर सुखी बन जाओ। आगे से नहीं होगी। विजयी हैं तो उसमें सुख है। कभी हार खा लेते हैं तो अपने में विश्वास कम हो जाता है, फिर से ऐसा दुःख न ले लूँ। अगर दुःखी होने की आदत पड़ती है तो वो आदत भी बहुत खराब है, वो छोड़ती नहीं है। ये भी एक रियलाइजेशन हो।

कोई भी बात ठीक कैसे होगी! शान्त प्रिय बनने से ठीक हो जायेगी, सोचने से ठीक नहीं होगी। शुभ चिन्तक बनने से बात ठीक हो जाती है। शुभचिन्तन में रहूँ तो शुभचिन्तक बनूँ। भले कोई मेरे बारे में कुछ सोचे। हम अपने चिन्तन में व्यर्थ मिक्स न करूँ। अपने शुभचिन्तन में व्यर्थ को मिक्स करूँगी तो दूसरे के लिए शुभचिन्तक नहीं रह सकेंगी। ये भी जैसे नियम को तोड़ व्रत को भंग किया। ये भी व्रत रखना है। किसी के प्रति कभी भी शुभचिन्तक रहने में कोई फर्क न पडे, ये व्रत रखना है। क्या निगेटिव इतना पावरफुल है जो मेरे पाजिटिव को दबा सकता है! पॉजिटिव निगेटिव को दबा दे। क्यों, क्या में गये तो वो भी समय गया। समय बडा बलवान है, संगमयुग का छोटा सा युग।

संगमयुग पर सब बातें पास होती जा रही हैं, हम भी आगे बढ़ते जा रहे हैं। कभी ये भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि ये विघ्न कब से आ रहा है, कब पूरा होगा। ये भी प्रभाव है। एक विघ्न डालने वाले हैं, एक विघ्न से घबराने वाले हैं, एक विघ्न को खत्म करने वाले हैं। मैं कौन हूँ? बाबा कहता हर आत्मा को पहचान। मैं कोई विघ्न रूप न बनूँ, सेवा करूँ न करूँ, परन्तु विघ्न रूप न रहूँ। शान्ति से बाबा की याद में रहूँ, किसके लिए भी विघ्न रूप न रहूँ - ये भी बोझा हो जायेगा। अगर थोडा कमजोर है तो विघ्न से घबराते हैं। घबराते हैं तो विघ्न थोडा फोर्स डालते हैं। इसलिए मित्रता भाव से हमारी शुभ राय है, कि सेवा निर्विघ्न रहे, ये कभी नहीं भूलना है। सब भूलें हो जायें परन्तु ये भूल न हो। सेवा जो मेरी है, वो निर्विघ्न रहे। सेवा सब कर रहे हैं, पर हरेक के प्रति दुआ निकले। मेरा पार्ट ये हो। बाबा शिक्षक तो है ही, पर रक्षा करके बचा लेता है। जैसे रेसपान्सिबुल खुद है।

नये साल में हमें चिन्ता भय दुःख से मुक्त रहना है। मुक्त हैं तो जीवनमुक्त हैं। व्यर्थ संकल्प से मुक्त, जरा सा एक संकल्प भी दूसरी बार न आये। वो व्यर्थ में चला जाता है। राइट, शुद्ध श्रेष्ठ एक ही शक्तिशाली संकल्प हो तो वो कमाल का काम करता है। करनकरावनहार बाबा भी तभी करता है जब संकल्प ठीक है।

ऐसी अचल अडोल स्थिति के आसन पर बैठने से और समर्थ संकल्प की शक्ति जमा करने से, बाबा के आगे ऐसी स्थिति से हाजिर रहने से, सदा के लिए वरदाता बाप से वरदान मिल जायेगा तो हम औरों के लिए वरदानी मूर्त बन जायेंगे।